प्रातःक्लास 27/4/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों के साथ रूहानी बाप रूह–रूहान कर रहे हैं वा कहेंगे राजयोग सिखा रहे हैं। तुम आये ही हो बेहद के बाप से राजयोग सीखने ; इसलिए बुद्धि चली जानी चाहिए बेहद के बाप तरफ। यह है परमात्म ज्ञान आत्माओं प्रति। भगवानुवाच शालीग्रामों प्रति। आत्माओं को ही सुनना है; इसलिए आत्म–अभिमानी बनना है। आगे तुम थे देह–अभिमानी। इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही बाप आकर तुम बच्चों को आत्म–अभिमानी बनाते हैं। आत्मअभिमानी और देह–अभिमानी का फ़र्क तुम समझ गये हो। बाप ने समझाया है आत्मा ही शरीर से पार्ट बजाती है। पढ़ती आत्मा है, शरीर नहीं; परन्तु देह–अभिमानी होने कारण समझते नहीं हैं आत्मा पढ़ती है। समझते हैं शरीर पढ़ती है। शरीर ही पढ़ाती है। तुम बच्चों को जो पढ़ाने वाला है वह तो है निराकार। उनका नाम है शिव। शिवबाबा को अपना शरीर नहीं होता। और सभी आत्माएं कहेंगी मेरा शरीर। यह किसने कहा? आत्मा ने कहा यह मेरा शरीर है। बाकी तो वह सभी हैं जिस्मानी पढ़ाईयों(याँ) अनेक प्रकार के। उसमें कितने सबजेक्ट्स होते हैं। मैट्रिक, बी.ए. आदि–2 कितने नाम है। इसमें तो एक ही नाम है। पढ़ाई भी एक ही पढ़ाते हैं। बाप ही आकर पढ़ाते हैं तो बाप को ही याद करना पड़े। हमको बेहद का बाप पढ़ाते हैं। उनका नाम है शिव। ऐसे नहीं कि नाम–रूप से न्यारा है। यह जो कहते हैं नाम–रूप से न्यारा, सो जैसे मनुष्यों का पड़ता है शरीर पर, तो कहेंगे फलाना, फलानी का शरीर, वैसे शिवबाबा का नहीं है। और तो सभी के शरीर के नाम आदि है। एक ही निराकार बाप है जिसका नाम है शिव। आते हैं पढ़ाने तो भी नाम शिव ही रहता है। यह शरीर तो उनका नहीं है। भगवान एक ही होता है। 10–20 तो नहीं होता। वह है ही एक। फिर मनुष्य उनको 24 अवतार, इतना अवतार कहते हैं आये हैं, तो उनको कुत्ते–बिल्ले, ठिक्कर में भी कह देते। जैसे खुद भक्तिमार्ग में भटके हैं, बाप कहते हैं मुझे भी बहुत भटकाया है। ड्रामा अनुसार तो उनकी बात–चीत सभी शीतल है। समझाते हैं मेरे ऊपर सभी ने कितना ..... है। मेरी कितनी ग्लानी की है। मनुष्य कहते हैं हम निष्काम सेवा करते हैं। बाप कहते हैं मेरे सिवाय और कोई निष्काम सेवा कर न सके। जो करता है उनको फल मिलता है ज़रूर। अभी तुमको फल मिल रहा है। गायन भी है भक्ति का फल भगवान देंगे; क्योंकि भगवान है ज्ञान का सागर। भक्तिमार्ग के हैं सभी कर्मकांड के शास्त्र। आधा कल्प तुम कर्मकांड आदि करते आये हो। अभी यह ज्ञान तो है पढ़ाई। पढ़ाई मिलती है एक ही बार और एक ही बाप से। बाप पुरुषोत्तम संगमयुग पर एक ही बार आकर तुमको पुरुषोत्तम बनाते हैं। फिर खुद चले जाते हैं। यह है ज्ञान। वह है भक्ति। आधा कल्प तुम भक्ति करते थे। अभी जो भक्ति नहीं करते हैं तो उन्हों को वहम पड़ता है पता नहीं भक्ति न करने से यह होता, यह मर पड़ते। बाप कहते हैं भक्ति से तुम दुर्गति को ही पाया है। कहते भी हैं आप आकर पतितों को पावन कर सद्गति में ले चलो। भक्ति अलग है, ज्ञान अलग है। भक्ति से रात , आधा कल्प। फिर ज्ञान दिन, आधा कल्प। रामराज्य बेहद का, तो रावण राज्य भी बेहद का कहेंगे। टाइम दोनों का एक ही है। भोगी होने कारण दुनिया की वृद्धि जास्ती होती रहती है। आयु भी कम हो जाती। मनुष्यों की वृद्धि जास्ती हो.....; इसलिए कितने प्रबन्ध रचते हैं। तुम बच्चे जानते हो मनुष्यों की बुद्धि कम हो यह तो बाप का ..... है। यह कोई मनुष्य का काम नहीं। तो जानते भी नहीं हैं। तुम भी अभी जानते हो। इतनी बड़ी सृष्टि है उनको कम करना बाप का ही काम है। बाप आते ही हैं कम करने। मनुष्य पुकारते भी हैं कि बाबा आओ, आकर सृष्टि को कम करो। वह तो कुछ भी जानते ही नहीं हैं। बाप कितना कम कर देते हैं। बाकी थोड़े मनुष्य ..... रहते हैं। बाकी सभी आत्माएं अपने घर चली जाती हैं। फिर नम्बरवार पार्ट बजाने आती हैं। नाटक में ....का पार्ट देरी से होता है। वह घर से भी देरी से आते हैं। अपना धंधा पूरा कर पिछाड़ी में आ..... वाले अपना धंधा–धोरी आदि भी करते हैं ना । फिर समय पर नाटक में आ जाते हैं पार्ट बजाने। तुम्हारा..... है। पिछाड़ी में जिनका पार्ट है वह पिछाड़ी में ही आते हैं। पहले–2 शुरू के पार्टधारी जो हैं

वह सतयुग आदि में आते हैं। पिछाड़ी देखो तो अभी आते रहते हैं। डार, टार–टारियां, पत्ते आदि पिछाड़ी तक आते रहते हैं। इस समय तुम बच्चों को ज्ञान की बातें समझाई जाती हैं। और सबेरे याद में बैठते हो। वह है ड्रिल। आत्मा को अपने बाप को याद करना है। योग अक्षर छोड़ दो। इससे मूंझते हैं। कहते हैं हमारा योग नहीं लगता। बाप कहते हैं अरे , बाप को याद करना क्या अच्छी बात नहीं है? याद न करेंगे तो पावन कैसे बनेंगे? बाप है ही पतित–पावन। साधु–संत आदि सभी गाते रहते हैं पतित–पावन ..... तालियां बजाते गंगा में जाते स्नान करने। भाषण आदि करते हैं तो उन्हों को जो अपने हैं सभी को ले जाते हैं। उन्हों को आमदनी तो बहुत होती है ना। वह जाते आमदनी के लिए। कफ्नी पहनी, सन्यासी बने। फिर गृहस्थी लोग उन्हों को सभी कुछ पहनाते हैं। फायदा तो कुछ भी होता नहीं। वह हैं अनेक गुरू। सद्गुरू तो एक ही बेहद के बाप को कहा जाता है। सर्वव्यापी है, ठिक्कर–भित्तर में है, फिर सदगुरू कहां से आया? यह सभी हैं भक्ति की बातें। जिससे मनुष्य दुर्गति को पाते हैं। ऐसे नहीं कि डोरापा देना है कि भक्तिमार्ग का पार्ट ही क्यों रखा? नहीं, यह अनादि, अविनाशी ड्रामा के आदि, मध्य, अंत का राज़ समझाते हैं। यह है वैरायटी धर्मों का, वैरायटी मनुष्यों का वृक्ष। तुम बच्चों की बुद्धि में यह याद है। सारी सृष्टि के जो भी मनुष्य मात्र हैं सभी पार्टधारी हैं। जनावरों की तो बात ही नहीं। कितने ढेर मनुष्य हैं। हिसाब निकालते हैं ना। इस समय इतने मनुष्य हैं। हिसाब करते हैं। कितनी वृद्धि होती है। वर्ष में इतने करोड़ पैदा हो जावेंगे। अभी इतने करोड़ बढ़ते जायें तो इतनी जगह ही कहां है? तब बाप कहते हैं मैं आता हूँ। लिमिटेड नम्बर है। जब सभी आत्माएं आ जाती हैं, ऊपर हमारा घर खाली हो जाता है, मैं आ जाता हूँ, तो मेरे होते बाकी जो भी बचत आत्माएं ऊपर में हैं वह भी सभी आ जाते हैं। झाड़ कब सूखता नही। चलता आता है। पिछाड़ी में जब वहां कोई भी नहीं रहता है तो यह फिर झाड़ ख़त्म हो जावेगा। फिर सभी जावेंगे। नई दुनियां में कितने थोड़े हैं। अभी तो कितने ढेर हैं। शरीर तो सभी के बदलते जाते हैं। वह भी जन्म वही लेंगे जो कल्प–2 लेते आये हैं। यह वर्ल्ड ड्रामा कैसे चलता है सिवाय बाप के कोई समझा न सके। बच्चों में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते हैं। बेहद का नाटक कितना बड़ा है। कितने समझने की बातें हैं। बेहद का बाप तो सभी से ऊँच ते ऊँच है। ज्ञान का सागर है। बाकी वह तो लिमिटेड है। वेद–शास्त्र बनते हैं। जास्ती तो कुछ बनेगा नहीं। तुम तो यह लिखते जाओ कितने ढेर कागज़ हो जाये। लम्बी–चौड़ी गीता बन जाये। शुरू से लेकर जो समझाते हैं वह तुम सभी लिखकर छपाते रहो तो इस मकान से भी बड़ी गीता हो जाये। कोई उठा भी न सके। छप भी न सके; इसलिए यह बड़ाई दे दी है कि सागर मस बनाओ सारा जंगल कलम बनाओ तो भी पूरा न हो। गायन भी है चिड़ियाओं ने सागर को हप किया। सुखा दिया। वह तो सभी हैं दंत कथाएं। तुम चिड़ियाएं हो ना। ज्ञान सागर से तुम सारा ज्ञान हप कर रहे हो। हज़म करते जाते हो। कोई बहुत करते, कोई थोड़ा। बाकी ऐसे नहीं कि वह चिड़ियाएं कोई सागर को सुखावेंगी। सभी बेकायदे कहानियां हैं भक्ति मार्ग के। अक़्ल की बात नहीं। मनुष्य कितने बेअक़्ल बन जाते हैं; इसलिए बाप ने कहा है जंगली जनावर बन पड़े हैं। तुम अभी क्या से क्या बनते हो। तुम ब्राह्मण बने हो। ज्ञान मिला है, तो तुम कितना जान गये हो। मनुष्यों को तुम समझाते हो तो भी विश्वास नहीं करते हैं कि ऐसे हो सकता होगा। कल्प–2 तुम यह धंधा आदि करते हो। पढ़ाई पढ़ते हो। उनमें कुछ भी कम–जास्ती होना न है। जितना जो पुरुषार्थ करते हैं वह प्रारब्ध बनती है। हरेक समझते हैं कितना हम पुरुषार्थ करते हैं। कितना पद पाने लायक बन रहे हैं। स्कूल में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार इम्तहान पास करते हैं। तुम जानते हो सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी भी बनते हो। जो नापास हो पड़ते हैं वह चन्द्रवंशी में चले जाते हैं। कोई समझ भी न सके कि राम को यह बाण आदि क्यों दिये हैं। मारा–मारी की हिस्ट्री बना दी है। इस

समय है ही मारा–मारी। उसमें सभी कुछ आ जाता है। सबसे जास्ती मारा–मारी है काम कटारी की। मार–2 करके आयु ही छोटी कर दी है। तुम जानते हो वहां हमारी आयु खुटती नहीं। एक शरीर छोड़ आपे ही लेते हैं। प्रजा में शरीर में छोड़ेंगे तो जानेंगे हम प्रजा में शरीर लेंगे। प्रिंस होगा तो समझेंगे कि हम जाकर प्रिंस बनेंगे। अज्ञान काल में ऐसे नहीं समझते हैं। बाकी हाँ, जो जैसे कर्म करते हैं तो उनका फल मिलता है। जैसे कोई हॉस्पिटल बनाते हैं तो दूसरे जन्म में उनकी आयु बड़ी और तन्दुरुस्त होगी। कोई स्कूल बनाते, कोई धर्मशाला बनाते हैं तो उनको एक जन्म लिए अल्पकाल का सुख मिलता है। यहां तो बच्चे आते हैं। बाबा उनसे पूछते हैं तुमको कितने बच्चे हैं? तो कहते हैं हमको तीन बच्चे हैं। एक वह है; क्योंकि वर्सा देता है और लेता है। हिसाब है ना। उनको कुछ लेने का तो नहीं है। चावल मुट्ठी लेकर महल देते हैं; इसलिए उनको भोलानाथ कहा जाता है। शंकर को भोलानाथ नहीं कहेंगे। जिसके आगे कहते थे झोली भर दो। शिव और शंकर को इकट्ठा कर देते हैं; परन्तु शिव के आगे कब ऐसे नहीं कहेंगे झोली भर दो .....शंकर को कहते हैं ; क्योंकि शिव को तो नाम–रूप से न्यारा कह देते हैं। शंकर के लिए कहते हैं आँख खोलने से ही विनाश कर देते हैं। वह सूक्ष्मवतन में, तुम यहां। फिर झोली कैसे भरेंगे? शंकर तो यहां आते ही नहीं। वह क्या आकर करेंगे? उनको तो ज्ञान सागर, पतित–पावन कहा नहीं जाता है। तब बाप कहते हैं यह भक्तिमार्ग के जो चित्र हैं, शास्त्र आदि हैं उन सभी का तुमको सार बताता हूँ। भक्ति का फल देता हूँ। भक्ति का फल होता है अल्पकाल क्षण फंगुर। सन्यासी आदि भी कहते हैं सुख काग विष्टा समान है; इसलिए वह घर–बार छोड़ भागते हैं। कहते हैं हमको स्वर्ग़ के सुख चाहिए ही नहीं जो फिर नर्क में आना पड़े। हमको तो मोक्ष चाहिए। तो यह बुद्धि में रखो यह बेहद का नाटक है। इस नाटक से एक भी आत्मा छूट नहीं सकती। यह अनादि खेल बना हुआ है। पहले से ही बना बनाया है। गाते हैं ना बनी बनाई बन रही .....ड्रामा में नूँध है फिर तो चिंता की कोई बात ही नहीं; परन्तु मनुष्यों को भक्तिमार्ग में चिंता करनी ही पड़ती है। जो कुछ भक्तिमार्ग में पास किया वह फिर भी होगा। यह भी जानते हो 84 का चक्र हम खाते रहते हैं। यह कब बंद नहीं होता। ड्रामा बना बनाया है। इसमें तुम अपने पार्ट को उड़ा कैसे सकते हो? तुम्हारे कहने से थोड़े ही निकल जावेगा। मोक्ष को पाना, ज्योति ज्योत समाना, ब्रह्म में लीन होना यह भी एक मिथ्या है। जो समझाते हैं। अनेक मत–मतांतर हैं ना। अनेक धर्म हैं। फिर कह देते तुमरी गत–मत तुम्हीं जानो। तुम्हारी श्रीमत से जो सद्गति मिलती है सो तुम जानते हो। तुम जब आओ तो हम भी जाने। तुम जब आओ तो हम पावन भी बने, पढ़ाई पढ़ें और हमारी सद्गति हो। अभी तो है दुर्गति। सद्गति हो जाती है फिर कोई बुलाते नहीं। यह भी मनुष्यों की बुद्धि में नहीं आता कि हमारी क्या दुर्गति हुई है। दुःखी भी बहुत हैं। बच्चे जानते हैं दुःखों की तो पहाड़ गिरनी है। खूनी नाहक खेल कहते हैं ना। गोवर्धन पहाड़ भी दिखाते हैं कि अँगुली से उठाया। अर्थ कुछ भी नही जानते। तुम थोड़ा बच्चे सारा दुःख का पहाड़ बदल कर सोने का बना देते हो। तुम्हारा पार्ट जास्ती है। तुम्हारी महिमा भी जास्ती है। मैजॉरिटी है ना। दुःख भी सहन करते हो। अभी तुम बच्चों को सभी को वशीकरण मंत्र देना है। कहते हैं ना तुलसीदा(स) चन्दन घिसे तिलक देते रघुवीर .....तिलक तो तुमको मिलता है। तिलक तो बेशक पाते हो ; परन्तु अपनी–2 मेहनत से। यह राजयोग है ना। तुम राजाई के लिए पढ़ रहे हो। सन्यासी तो राजाई पढ़ा न सके। राजाई पढ़ाने वाला एक ही बाप है। अभी तुम घर में बैठे हो। इनको दरकार भी नहीं कहेंगे। ..... प्रिंस–प्रिंसेज़ आपस में मिलते हैं। इनको स्कूल ही कहते। पाठशाला है। कोई ब्राह्मणी ..... नहीं ले आ सकती। इस पर एक कहानी भी है ना। पतित वायुमण्डल को ख़राब कर देंगे।

इसलिए अलौ(अलाउ) नहीं करते हैं जब पवित्र बने। अभी तो अलौ करते हो। अगर तुम पावन बने तो ठीक, पतित बने तो नीचे गिर पड़ेंगे। फिर धारणा नहीं होगी। यह हुआ अपन को आपे ही श्रापित करना रावण मत पर। विकारी है ही रावण मत। राम की मत छोड़ा रावण की मत से विकारी बने पत्थर बुद्धि बन जाते हैं। शास्त्रों में तो कहानियां कितनी लिख दी हैं। रोचक बातें बहुत हैं। रोचक बातें सुनाकर बहुत डराते हैं। जैसे गरूड़ पुराड़ है। उनको रोचक पुस्तक कहा जाता है। बाप कहते हैं मनुष्य तो मनुष्य ही बनता है। बाकी कोई फादर आदि नहीं बनते। शास्त्रों में कितनी अंधश्रद्धा की बातें हैं। उनको कहा जाता है अंधश्रद्धा का मार्ग। पढ़ाई में तो अंधश्रद्धा होती नहीं। स्टूडेन्ट जाते ही हैं प(ढ़)ने लिए। पास होकर पैसा पैदा करेंगे। यह कोई अंधश्रद्धा नहीं है। भगवान पास तुम आये हो पढ़ने लिए। बाबा टीचर भी, फिर सदगुरू भी है। सुप्रीम बाप है। परम को सुप्रीम कहा जाता है। लौकिक बाप को परम नही कहा जाता। परमपिता, परमटीचर, परमसदगुरू ऊँच ते ऊँच एक ही है। वह पढ़ावेंगे तो ज़रूर ऊँच ते ऊँच पद मिलेगा। भगवान पढ़ाते हैं यह भी बुद्धि में रहना चाहिए ना। भारत में यह देवी–देवताएं ही हैं जिनको विलायत वाले भी भगवान–भगवती कहते हैं; परन्तु बाप समझाते हैं भगवान–भगवती कह न सके। यह तो आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना होती है। तुम जानते हो यही पत्थर बुद्धि थे। फिर बाबा ने पढ़ाकर पारस बुद्धि बनाया। दुनियां में यह कोई नहीं जानते। रामचन्द्र भी नापास हुआ ना। पहले तो ज़रूर दास–दासियां ही बनना पड़े। ल.ना. के आगे। फिर पीछे ऊँच मर्तबा मिलेगा। न पढ़े हुये हैं तो दास–दासियां ज़रूर बनना पड़े। बाप बैठ समझाते हैं। यह कथा है ही नर से नारायण बनने की। राम–सीता बनने की नहीं। एक ही बात। यकी बोली या हुसेन। तुम कहते भी हो हम तो नर से नारायण बनेंगे। सत्य ना. की कथा सुन रही हो। सत्य नारायण की कथा सुनी है, राम–सीता बनने की कथा सुनी नहीं है। तुम सत्य ना. की ही कथा ज(न्)म व ज(न्)म सुनते आये हो। सबसे जास्ती कथा किसने सुनी होगी? तुम कहेंगे हमने; क्योंकि बहुत भक्ति हमने ही की है। भगवान फल भी इन्हों को ही देंगे जिन्होंने बहुत भक्ति की है। वही झट समझकर और सर्विस पर लग जाते हैं। भक्ति कम की है तो समझते नहीं। तुम जानते हो पहले–2 हमने शिवबाबा का मन्दिर बनाया। अव्यभिचारी भक्ति की। आधा कल्प तुमने भक्ति की है तो राज्य भी तुमको मिलता है। यह समझ की बात है ना। प्रदर्शनी आदि पर जांच करो। लिखते हैं बाबा सैटिसफाय होकर जाते हैं। बाबा लिख देते हैं पूरा भक्त नहीं है। जिसने पहले शिवबाबा की भक्ति की है, निश्चय है शिवबाबा पढ़ाते हैं तो झट बाबा के पास भागे। बाबा पूछते हैं कब निश्चय हुआ कि बाप आये हैं? पहले तो उनसे मिलना चाहिए ना। हाँ कोई–2 को बहुत खवास(ख़्वाइश) होती है मिलने की। कोई को तो खयाल भी नहीं आता। तब ही बाबा पूछते हैं आते तो रहे; परन्तु निश्चय कब हुआ? बाबा समझ जाते हैं पुराना भक्त नहीं है। हिसाब है ना। इसमें कितनी विशाल बुद्धि चाहिए। पुराने भक्त इस ज्ञान को चटक पड़ेंगे। दिन–प्रतिदिन यह नॉलेज लगता जावेगा; क्योंकि तुम जितना याद में रहेंगे उतनी ही ताकत आवेगी। सभी का ताला खुलता जावेगा; परन्तु जब इतनी ताकत आवे। जौहर भरे। आगे चल तुम समझेंगे सृष्टि कैसे बदलती है। हम कैसे ट्रांसफर होते हैं। अभी टाइम पड़ा है। फिर मालूम पड़ जावेगा कौन–2 माला का दाना बनते हैं। अभी तो अवस्थाएं ऊपर–नीचे होती रहती हैं; इसलिए ब्राह्मणों की माला नहीं बनती। तुम जब पास होते हो तो रुद्रमाला बनती है। पुरुषार्थ करना है। कहते भी हैं नर से ना. बने अर्थात् रुद्रमाला में जावें तो उनको भी याद करना पड़े ना। याद करते–2 पाप कट जावेंगे। भक्ति माला में सबसे तीखा नारद था। हम ल. को वर सकते हैं, तो उनको कहा अपने को देखो। तो शक़्ल देखी हम तो बन्दर हैं हम कैसे ल. को वर सकेंगे। ज्ञान बिगर तो कुछ हो न सके। मुख्य है याद की यात्रा। तो कट उतर जाये। यही फ़िकरात बच्चों को रहनी चाहिए। फिर 21 जन्म फ़िक्र से फारग़ हो जावेंगे। स्टूडेन्ट को फ़िकरात रहती है हम पास विद ऑनर होवें। है ईश्वरीय रेस। अच्छा, बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। नमस्ते।